REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2025

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के हिन्दी भाषा साहित्य की राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका

विनय खाण्ड़ेकर[1] , डॉ.स्नेहलता निर्मलकर[2]
(शोधार्थी), भाषा एवं साहित्य विभाग, डॉ.सी.व्ही.रमन विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
(शोध निर्देशिका) सह–प्राध्यापक, भाषा एवं साहित्य विभाग, डॉ.सी.व्ही.रमन विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

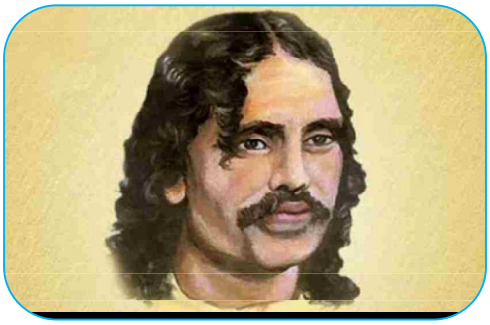

हिन्दी भाषा साहित्य का दायर बहुत बड़ा है यह विश्व के एक बहुत बड़े भू खण्ड में बोली जाने वाली मुख्य भाषा है, खड़ी बोली से ही आधुनिक हिन्दी भाषा का विकास हो पाया है जो एक सिमित क्षेत्र की बोली हुआ करती थी। काव्य एवं जनसंचार की भाषा का रूप लेकर यह अपने सिमित क्षेत्र के दायरे से आगे बढ राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुका है। आज इसे हम भारतीय अपनी मातृ–भाषा भी कहते हैं। मातृ–भाषा से तात्पर्य उस भाषा या बोली से होता है जिस भाषा या बोली को बच्चा अपनी माँ से सिखता है आधुनिक युग में भारतेंदू हरिशचंद्र जी ने भी मातृ–भाषा पर बल दिया है उन्होंने कहा है कि मनुष्य का सर्वांगीण विकास मातृ भाषा से ही सम्भव हो पाता है, लेकिन यहाँ पर उनका मानना था की मातृ–भाषा वह भाषा है जो सम्पूर्ण राष्ट्र को अपने में समाहित कर ले।

शब्दकुंजी–हिन्दी भाषा साहित्य, राष्ट्रभाषा, मातृ–भाषा, राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान.....इत्यादि ।

प्रस्तावना

भारत देश प्रारम्भ से ही गुलामी में जंजीरों में जकड़ा हुआ था इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था, यह देश अपने अतुल्य रहस्यों, खनीज संसाधनो, स्वर्ण, रत्न, हीरे, मोति, आभूषणों, धन –धान्यों आदि से परिपूर्ण हुआ करती थी, इन्हीं विशेषताओं के कारण अनेको आक्रमणकारी आये यहाँ की समस्त भौतिक संसाधनो का दोहन किया एवं उसे लूट कर अपने साथ ले गये। हिन्दी साहित्य के इतिहास को देखा जाए तो इसे चार काल में विभाजित किया गया है 1 वीरगाथा काल 2 भक्तिकाल 3 रीतिकाल 4 आधुनिक काल । आधुनिक काल के प्रणेता हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिशचंद्र जी को माना जाता है भारतदेन्दु जी का प्रादुर्भाव एक असहज घटना साबित हुई। भारतेन्दु जी का जन्म काशी के प्रसिद्ध वैश्य परिवार में सन् 1850 ई0 में हुआ था। भारतेन्दु हरिशचन्द्र कवि की प्रतिभा लेकर जन्मे थे उनके पिता गोपाल गिरिधर दास थे जी भी कवि थे जिन्होंने **'नहुश'** नामक गीति नाट्य की ब्रज भाषा में रचना की। सात वर्ष की उम्र में ही इन्होंने एक दोहा लिखा ''**ले व्योढा ठाढ़े भए श्री अनिरूद्ध सुजान बाणासुर की सैन को हननं लगे हनुमान** लिखकर पिता को दिखाया, पिता

जी ने महाकवि होने का आर्शीवाद दिया। वे बचपन में ही माता –पिता के सुख से वंचित हो गये। शोषित एवं वंचितों की आवज को अपने साहित्य के माध्य से उठाते रहे और केवल 35 वर्ष के अल्प आयु में विपुल साहित्य का सृजन कर वे हिन्दी भाषा का महान सेवा कर गये।

भारतेन्दु ने कवि वचन सुधा 1868, हरिशचन्द्र मैग्जीन 1873 तथा बाला बोधन 1874 नामक तीन पत्रिकाएं निकाली जो साहित्यिक दृष्टि से बहुत ही सफल थी एवं स्वाधीनता की चेतना के लिए उपजाऊ भूमि साबित हुई। आधुनिक काल में भारत में राष्ट्रीय आंदोलन अंग्रेजों एवं भारतीयों के बीच मुठभेड का परिणाम है। इसका प्रादुर्भाव पारम्परिक राष्ट्रभक्ति से हुआ। यह मातृ–भूमि, भाषा एवं पंथ से प्रेम एवं लगाव की एक सामाजिक अपितु सक्रिय भावना रही। किसी भी गुलाम राष्ट्र में राष्ट्रीय चेतना, नवजागरण के विकास का पहला चरण हुआ करता है।

शोध का उद्देश्य–

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी के हिन्दी भाषा साहित्य की राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका का अध्ययन करना ।
- स्वाधीनता आंदोलन में आधुनिक कालीन साहित्यकारों एवं उनके योगदान का पचियात्मक अध्ययन करना।
- भारतीय समाज में साहित्य तथा उनका राष्ट्र जागरण में पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

विश्लेषण–

भारतेन्दु हरिशचंद्र की रचनाएँ आधुनिक युग का प्रारम्भ था। उनकी जड़े सदैव स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े रहे । हरिशचंद्र और उनके समय के साहित्यकारों के साहित्यों में गद्य एवं पद्य दोनों की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। इन साहित्यकारों ने अपने साहित्यों में स्वाधीनता आंदोलन के क्रांतिकारियों की बढ़ –चढ़ कर प्रशंसा की है और भारत के अतीत के प्रति लोगों में भक्ति और विश्वास जगाने का भरपूर प्रयास किया है। स्वाधीनता आंदोलन में भारतेन्दु हरिशचंद्र जी ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारत में भी स्वतंत्रता आंदोलन की भावना ब्रिटिश साम्राज्यवाद के दबाव से उपजी थी। अंग्रेजी शोषण के अखिल भारतीय स्वरूप में राष्ट्रीय चेतना की भाव से प्रतिकिया विकसित हुई। बढ़ते अत्याचार, तनाव, धर्मान्तरण के डर तथा अत्याचारी प्रशासको के विरूद्ध सुधारवादी उत्साह ने पढ़े–लिखे भारतीयों को अपने संस्कार, संस्कृति पर नजर डालने को मजबूर कर दिया। वरनार्ड कोहन ने इसे ''इसे संस्कृति का मूर्त्तन'' कहा है। शिक्षित भारतवासियों ने अपनी संस्कृति को ऐसी मजबूत इकाई के रूप में निरूपित किया, जिसका खास उद्देश्य के लिए आसानी से तुलना किया जा सके।

यह सांस्कृति परियोजना अपने आपको उन्नीसवी सदी के सामाजिक और धार्मिक सुधारों के माध्यम से व्यक्त करता है इसका मूल शब्द पुनर्जागरण में ही निहित था। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति का पुनर्खोज करना था वह बुद्धिवाद, अनुभववाद, एकेश्वरवाद और व्यक्तिवाद के यूरोपीय आदर्शों से मेल खाए। भारतीय सभ्यता किसी भी तरह से पाश्चात्य सभ्यता से हीन नहीं है बल्कि अपनी आध्यात्मिक सिद्धांतो में उससे कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है। इसी कालखण्ड में राष्ट्र कवि भारतेदु हरिशचंद्र ने हिन्दी साहित्य को नवजागरण के मूल आधार के रूप में प्रस्तुत किया । हिन्दी के प्रचार–प्रसार का मुख्य जिम्मा उठाया। वे विभिन्न आयोजित किए जाने वाले सभाओं और गोष्ठियों में अक्सर वे यह प्रश्न उठाया करते थे की अंग्रेज शासक और हम गुलाम कैसे हो गये।

भारतेन्दू मण्डल के अन्य सशक्त कवियों में बाल कृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, प्रेमधन, ठाकुर जगमोहन, अम्बिकादत्त व्यास आदि का नाम लिया जाता है। इन्होंने भी अपनी बुद्वि एवं कुशलता से साहित्य का अवलम्बन लेकर भारतीय जनता को स्वाधीनता आंदोलन में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। भारतेन्दु जी का सम्पूर्ण मण्डल हिन्दी साहित्य के सच्चे साधक सिद्ध हुए । प्रत्येक कवि किसी न किसी पत्र – पत्रिका क सम्पादक थे। इन पत्रिकाओ ने हिन्दी भाषा को अपना माध्यम बनाकर ब्रिटिश हुकुमत के परों को काटा डाला। आम जनमानस में क्रांति की लहर गूंज उठी। राष्ट्रीयता की भावना गति पकड़ने लगी अंग्रेजो के शोषण नीति का भारतेन्दु द्वारा प्रत्यक्ष रूप से उल्लेख किया –

भीतर – भीतर सम रस चुसै, हँसि–हँसि के तन–मन–धन मूसै।
जाहिर बातन में अति क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेज।।

वास्तव में भारतेन्दू की राष्ट्रीय चिन्तनधारा के दो पक्ष थे एक देशप्रेम और दूसरा राजभक्ति । दोनो पक्षों में इस युग के कवियों ने हिन्दी भाषा का अलाव लेकर राष्ट्रयता की आग को बढ़ा दिया । इन्होंने हिन्दी–हिन्दू–हिन्दुस्तान का गुणगान किया तथा जजिया जैसे कर न लगाने वाले अंग्रेजों के शासन काल में प्रजा की सुख समृद्धि की मुक्त कंठ से प्रशंसा की उनके इस कुक्त कंठ से प्रशंसा की तीव्र स्वर का वास्तवित प्रवाह हिन्दी ने ही धारण किया। सुविधाओं से लाभ उठाने के लिए उन्होंने जनता को रूढ़िवादी प्रभावों से मुक्त होने का आग्रह किया।

भारतेन्दु हरिशचंद्र जी ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन को हिन्दी भाषा में तीव्र धार देने का कार्य किया । उनकी राजनीतिक चेतना के फलस्वरूप राष्ट्रभक्ति की धारा प्रवाहित हुई। 1857 के महान क्रांति के पश्चात् भारतेन्दु जी का आविर्भाव हुआ था। इस प्रथम राष्ट्रीय आंदोलन को पूर्व में कुचला जा चुका था। अंग्रेज हमेशा से ही जीतते आए थे। भारत पर इष्ट इंडिया कंपनी राज का लगभग अंत हो चुका था, उस समय बिटिश महारानी विक्टोरिया का शासन चल रहा था। इसी समय भारतेन्दु हरिशचंद्र ने अपनी राष्ट्रभक्ति को राजभक्ति का आवरण चढ़ा कर बड़ी निपुर्णता से प्रस्तुत किया। समय के साथ – साथ भारतेन्दु जी के दृष्टिकोंण में भी परिवर्तन आया। अंग्रेजो की धर्म निरपेक्षता की नीति, विक्टोरिया महारानी की घोषणाओं आदि से प्रसन्न होकर भारतेन्दु जी राजभक्ति परम कवितायें लिखी। बाद में उन्होंने अंग्रेजो की नीतियों का पूरजोर विरोध किया।

दादाभाई नरौजी ने भारत के पतन को **'भारतीय गरीबी कहा है'** भारतेन्दु जी ने कथन को नजदीकी से देखने का प्रयास किया। इसके कारणों की खोज के क्रम में उन्होंने महारानी विक्टोरिया के कानूनों विरूद्ध कडी टक्कर ली। अपनी मातृ–भाषा का उपयोग अंग्रेजी शिक्षा के विरोध में किया। **(निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा के मूल)** । भारतेन्दु ने चार्ल्स ग्रांट जैसे आंग्लवादियों की आलोचन का करारा जवाब देते हुए भारतीय राष्ट्रीयता के पतन के कारणों में जैसे – विधवा विवाह, बाल विवाह, जाति भेद, साम्प्रदायिकता , मदिरापान, छुआछूत आदि सामाजिक कुरीतियों को भरपूर विरोध किया।

भारतेन्दु इस बात को भलीभांति जानते थे कि भारत के पतन और दुर्दषा का मूल कारण अंग्रेजो द्वारा भारत का आर्थिक दोहन एवं साम्राज्यवादी नीति है। अंग्रेजी भारत के धन का बर्हिगमन कर रहे थे, उस समय भारतेन्दु अपनी नाटक ''भारत दुर्दषा , अंधेर नगरी, के माध्यम से जनता को जागृत करने की कोशिश की। अंग्रेजो के भारत में मौजूदगी का समझने के लिए उन्होंने साम्राज्यवाद के सिद्धांतों एवं अर्थव्यवस्था को विस्तार से समझना अतिआवश्य नहीं समझा, अपनी कविताओं के माध्यम से सीधे कह डाला।

साम्प्रदायिक सद्भावना के रूप में तत्कालीन राष्ट्रीय एकता की माँग अधिक प्रबल थी। धार्मिक और सामाजिक स्तर पर हिन्दु–मुश्लिम को आपस में एक करने की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। इस साम्प्रदायिकता के अभाव में हमारा राष्ट्रीय आंदोलन बर्बाद हो जाता। भारतेन्दु ने साम्प्रदायिक एवं सामाजिक एकता के महत्व को लोगो को समझाया, सभी को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किए सभी को आपसी द्वेष, मतभेद को त्याग का राष्ट्र उद्धार में लगने को प्रेरित किया।

भारतेन्दु हरिशचंद्र की रचनाओं में भारतीय नवजागरण की एक धारा भारतीय परम्पराओं पर साम्राज्यवादी परम्पराओं के प्रभूत्व की ओर है तो दूसरी धारा भारतीय परम्पराओं के साम्राज्यवादी परम्पराओं से टकराहट की है एक को हम एकाकी नवजागरण तथा दूसरे को हम समग्र नवजागरण कह सकते हैं अध्ययन बताता है कि भारतेन्दू ने ही सर्वप्रथम समग्र नवजागरण की धारा का सूत्रपात किया था , उन्होंने सभी क्षेत्र में सुधार एवं मुक्ति का प्रश्न उठाया । 1857 की क्रांति की आग को उन्होंने बहुत लम्बे समय तक अपने हृदय में छिपाकर रखा था। जब भारतीय सिपाहियों ने मिस्त्र पर विजय प्राप्त की तब भारतेन्दू जी ने एक बहुचर्चित कविता का निर्माण किया –**''विजयनी विजय बैजयन्ती।** इस कविता का उदाहरण हमेशा उनकी राजभक्ति के संदर्भ में देखने को मिलता है। जब महारानी विक्टोरिया की उदारता और क्षमता की प्रशंसा की है। भारतीयों की वास्तविक दशा और उनकी ताकत का बखान कर इन्होंने लोगों को जागृत करने का बड़ा कार्य किया। वह भारतीयों के वर्तमान दुःखों, क्षमताओं तथा उनके ऐतिहासिक गौरव चिन्हों की भाव को गिनाने का कोई अवसर वे

व्यर्थ नहीं गवांते थे। इसी लिए उन्होंने तात्कालिक राजनैतिक घटनाओं को भी अपनी कविता का विषय बनाया। एक तरफ मध्ययुगीन भक्ति की रंगढ़ग वाली कविता तो दूसरी तरफ राजनीतिक घटनाओं पर अपनी कविताएं और मुकरियों से इतना विरोधाभाषा किया जो कहीं भी देखने को नहीं मिलेगी। पर दोनों ही चीजें एक समान ही थी। दुख के बयान के साथ स्वच्छन्दता की अंतर्निहित चाह भी थी।

साहित्य को इतिहास लेखन का बहुत बड़ा सकेंत मानता जाता है इस प्रकार भारतेन्दु ने हिन्दी साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण की आग जलाई। अपने पत्रों , नाटकों, निबंधों , काव्य एवं गद्यों को इसके लिए हथियार के रूप में उपयोग किया। देश के लगातार हो रहे पतन को देखकर भारतेन्दु ने अतीत का गौरवगाथा के माध्यम से वर्तमान युग को उन्नतिशील बनाने के गहन चेष्टा की। उन्होंने **'नारी नर सम होहि'** लिखा तो **हिन्दू पॉलिटी** पुस्तकें भी जनतंत्र पर लिखा । भारतेन्दु ने काव्य के सभी रूपों का इस्तेमाल भारत में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिए किया।

आधुनिक भारत के महान हिन्दी लेखकों में भारतेन्दु जी को आधुनिक हिन्दी साहित्य का पितामा कहा जाता है। इन्होंने अपनी कविताओं के साथ –साथ गद्य की नई शैलीओं को विकसित करने में ख्याती प्राप्त की थी। अपने कई नाटको में रोजमर्रा की जिंदगी का चरित्र चित्रण किया है अपनी रचनाओं में आम लोगो की समस्याएं , गरीबी ,शोषण, मध्यम वर्ग की अशांति को भी सम्बोधित किया है । इन्होंने सदैव अपनी रचनाओं राष्ट्र के प्रगति के लिए लोगों से आग्रह किया । वे स्वयं एक हिन्दू परंपरावादी एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे जो इस आधुनिक दुनिया में हिस्सा लेते हुए अपनी परम्पराओं के साथ सदैव निरंतरता बनाए रखने के लिए प्रसाररत् थे। इन्होने अपनी रचनाओं में भारत की गरीबी और विदेशी प्रभुत्व तथा उपनिवेशवाद के बारे में अपनी गहन भावनाओं को व्यक्त किया है। लोगों में हरिश्चंद्र का व्यापक प्रभाव था। इन्होनें अपने साहित्यिक कृतियों के बल पर रीती अवधि के काल का अंत और भारतेन्दु अवधि के प्रारम्भ पर मोहर लगाई। इन्होंने अपने जीवनकाल में सदैव हिन्दी साहित्य के पुनरोद्धार पर बल दिया। जनमानस के राय को अपने नाटकों के माध्य से नया आकार देने का प्रयास करते रहे। हिन्दी भाषा के विकास के लिए उनकी वकालत के बहुत ही महत्वपूर्ण एवं राजनीतिक परिणाम देखने को मिले। इन्हीं के कारण अंततः भारत में आधुनिक हिन्दी की स्थापना हुई एवं अधिकारिक भाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता दी गई।

उपसंहार

आधुनिक हिन्दी भाषा साहित्य को भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनाया। उनके साहित्य रचना में सांस्कृतिक, सामाजिक, एवं राजनीतिक जागरूकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उन्होंने अपनी लेखनी एवं रचनाओं के माध्यम से अंग्रेजी हुकूमत की कूटनीति, भारतीय समाज में शिक्षा , भाषा की विसंगतियाँ, और महत्व पर बल दिया। भारतेन्दु हरिशचंद्र जी के युग में हिन्दी भाषा साहित्य को जो सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना के लिए अभिवृत्ति प्राप्त हुई, उसने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान एक मजबूती पूर्वक वैचारिक आधार प्रदान किया। उन्होंने हिन्दी भाषा को आम जनमानस की भाषा बनाकर राष्ट्र निर्माण के स्वप्न को भाषा साहित्य रूपी शब्दों में पिरोया। उनके रचनाओं नाटकों, पत्रकारिताओं, निबंधों तथा काव्य रचनाओं ने आम जनमानस को न केवल शिक्षा प्रदान करने का दुलर्भ कार्य किया, बल्कि उन सबको संगठित तथा जागरूक करने का कार्य भी किया। अतः यह कहना अतिसंयोक्ति न होगी कि भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी का हिन्दी भाषा साहित्य में योगदान केवल एक साहित्यिक योगदान नहीं था, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सामाजिक, राजनौतिक, वैचारिक एवं सांस्कृतिक बुनियाद को मजबूत करने वाला था। उनके द्वारा बोया गया भाषा एवं साहित्य के बीजों आने वाले समय में स्वाधीनता आंदोलन को साहित्यिक शब्द और भाषायी स्वर प्रदान किया।

संदर्भ ग्रंथ–

- डॉ रितेश कुमार 2013, भारतेन्दु हरिश्चंद्र और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन : संदर्भ एवं मुद्दे।
- यदुनंदन प्रसाद उपाध्याय शोध पत्र 2016 भारतीय भाषाओं की अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका।

- डॉ. नागेन्द्र, हिन्दी का इतिहास डॉ. नागेन्द्र 440
- भारतेन्दु की पत्रकारिता, लेख (भारतेन्दु हरिशचंद्र) पृ.144
- भारत – दुर्दशा, भारतेन्दु हरिश्चंद्र।
- इकाई 23 स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रवादी साहित्य ।
- बबीता गुप्ता दिल्ली स्वतंत्रता में साहित्यकारों का अतुलनीय योगदान, साहित्यिक लेख – 15 अगस्त 2023।

विनय खाण्ड़ेकर
(शोधार्थी), भाषा एवं साहित्य विभाग, डॉ.सी.व्ही.रमन विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)